Implementation of MPSACAR

MP State Action Plan for Containment of Antimicrobial Resistance

Dr. Pankaj Shulka

Director NHM, MP

State Nodal Officer - QA

Lead MPSAPCAR

Dr. Sagar Khadanga

Nodal, MPSAPCAR, AIIMS Bhopal

Dr. Vivek Mishra

Consultant State QA

Disclosure:

- Joint intellectual property of:

  - ✓NHM Madhya Pradesh
  - ✓NCDC
  - ✓WHO
  - ✓ICMR
  - ✓AIIMS Bhopal

Global action plan: GAP AMR→ 2015
National action plan: NAP AMR→ 2017
The difference ?

- The 6th strategic priority has been added in NAP AMR
  - ✓Leadership role

The Leaders:

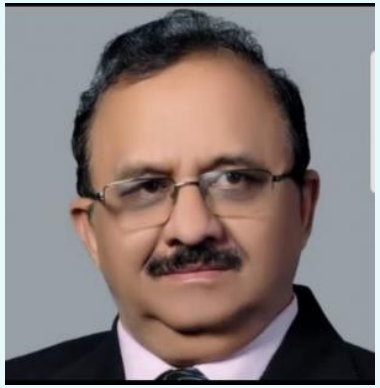

Collaborators

- World Health Organisation (**WHO**)
- **ICMR** New Delhi
- National Centre for Disease Control (**NCDC**)
- AIIMS Bhopal

The paths covered:

Dr. Pankaj Shukla : Director NHM

The kick start:

14 Nov 2018

At AIIMS Bhopal all stake holders

- DHS / DME
- Private doctors
- State Nursing Dept
- Pharmacist Assoction
- Drug controller
- Veterinary & Agriculture representatives

PR CELL

Press Release

Inappropriate Antibiotic use is a major problem. This leads to antibiotic resistance. As a result, the available antibiotics do not work properly.

Each November, **World Antibiotic Awareness Week (WAAW)** is observed to encourage best practices among the general public, health workers and policy makers to avoid further emergence and spread of antibiotic resistance. This year AIIMS, Bhopal is observing **WAAW from 12th -18th Nov 2018.**

AIIMS Bhopal in collaboration with ICMR New Delhi, NHM and Dept. of Health, Govt. of Madhya Pradesh is organizing various events from 12th Nov. Doctors, nurses, students and patients are made aware about the misuse of antibiotics. Lecture series is being organized with joint effort of Dept. of General Medicine, Dept. of Microbiology and Resource Center of Tropical and Infectious Diseases (RCTID) of the Institute.

On this occasion, Prof. Sarman Singh, Director, AIIMS, Bhopal said that AIIMS, Bhopal in association with NHM and Dept. of Health, Madhya Pradesh is dedicated to continue the work to train the doctors of District Hospitals of Madhya Pradesh. Apart from this, the Faculty Members of AIIMS Bhopal will also train the doctors selected by NHM, Madhya Pradesh. On this occasion, Dr. Pankaj Shukla, Joint Director, Quality Assurance, NHM, Bhopal said that the trainings will be done at different places of Madhya Pradesh like Jabalpur, Indore, Gwalior and Bhopal. ICMR has already funded for the training of these doctors. These trained doctors in turn will train the doctors, who work in PHCs and CHCs of the Districts.

MP Antibiotic Policy

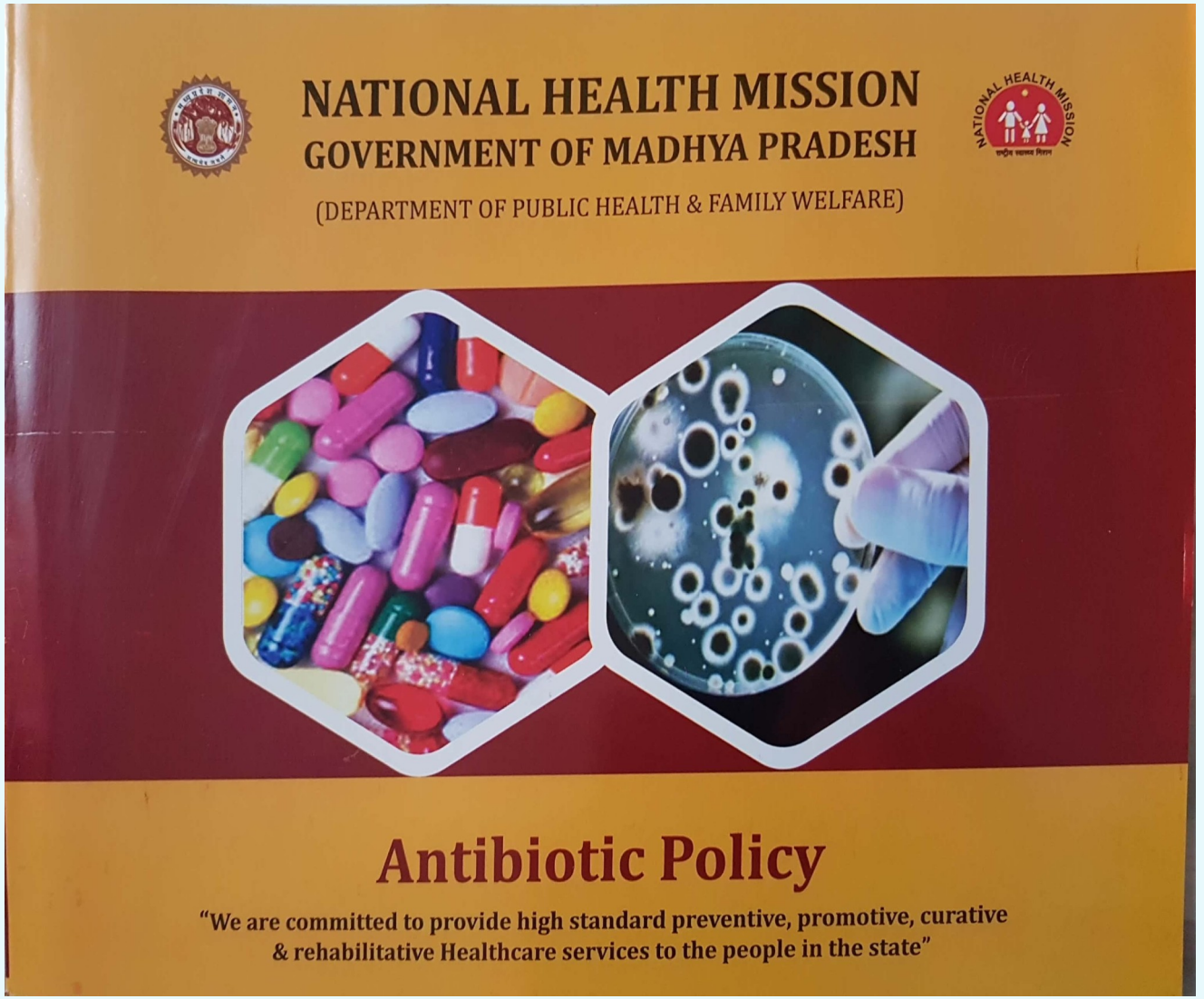

Antimicrobial Resistance and its Containment in M.P.

M.P. State Action Plan on Antimicrobial Resistance Containment.

Development of mobile app - On Rational Use Of Antibiotic Uses.

Launch of MPSAPCAR 26th July 2019

The white paper: **MPSAPCAR**

मध्यप्रदेश सरकार

एंटीबायोटिक रेजिस्टेन्स पर भोपाल घोषणा पत्र

26 जुलाई 2019 को भोपाल में पशुपालन, किसान कल्याण और कृषि विकास, मत्स्य पालन, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, श्रम, चिकित्सा शिक्षा, सार्वजनिक कार्य और पर्यावरण और अन्य हितधारकों के विभागों के मंत्रियों तथा नीति निर्माताओं की उपस्थिति में संयुक्त घोषणा।

Scanned by CamScanner

Madhya Pradesh

State Action Plan for Containment of Antimicrobial Resistance (MP-SAPCAR)

Jointly developed by **Departments of**

Animal Husbandry, Farmer Welfare & Agriculture Development, Fisheries, Health & Family Welfare, Labour, Medical Education, Public Work & Environment

MP-SAPCAR: Strategic Priorities

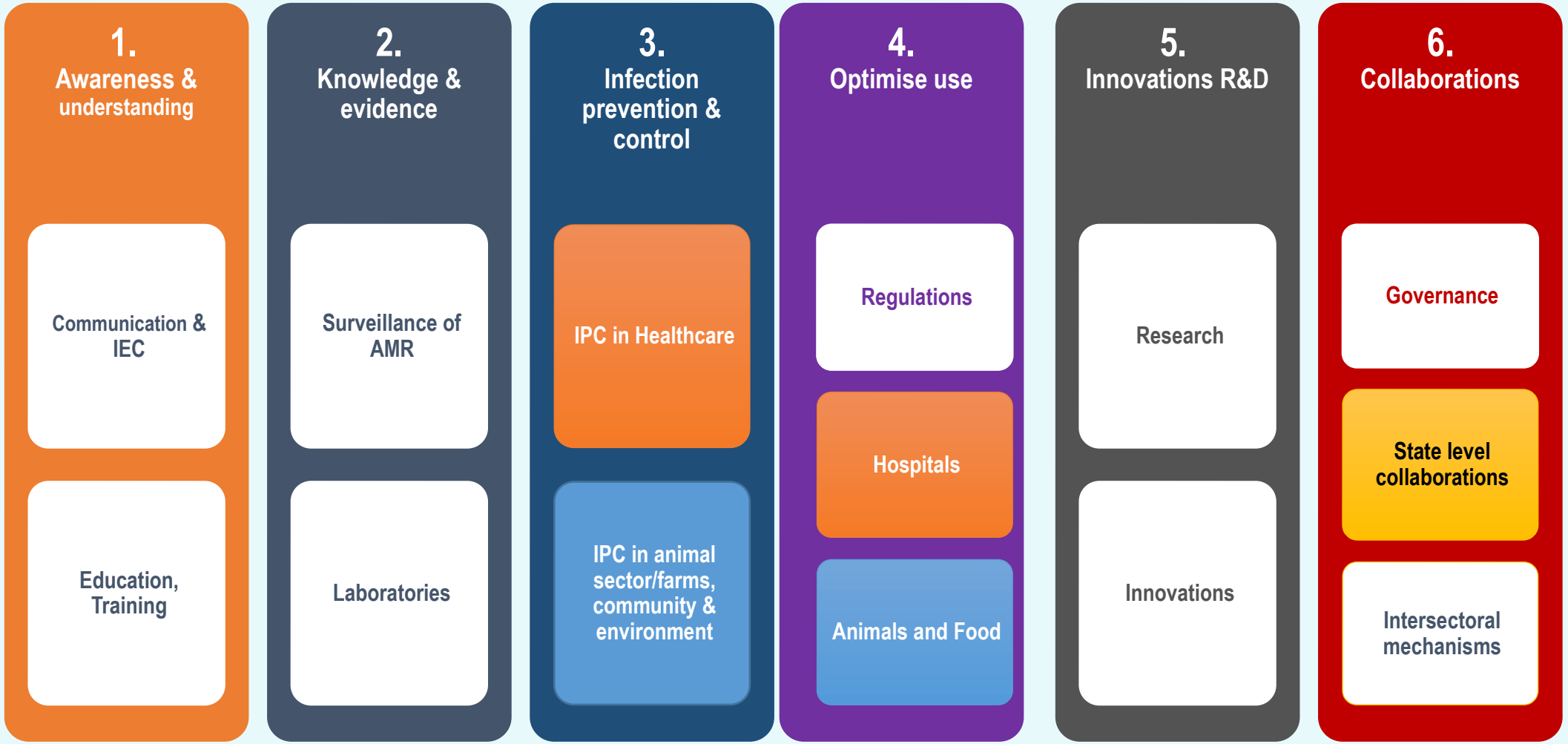

1. Awareness & understanding

Communication & IEC

Education, Training

Information and Communication

- Formulation of Antibiotic policy
- State Action plan for containment of AMR
- Media Awareness workshop for awareness in public
- Implementation of MOBILE app on rational use of Antibiotic use for schedule H1 drugs
- AIIMS will develop IEC for awareness

Education and Training

- Training of Master Trainers conducted for doctors in all districts,
- Training of Nursing Home association members, IMS,IAP, Pharmacist Association
- Awareness Workshops conducted for all stakeholders
- Identified Nodal officers for veterinary and health department

प्रशासन अकादमी में राज्य एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस वर्कशॉप का आयोजन

केरल के बाद देश में एएमआर पॉलिसी लागू करने वाला दूसरा राज्य होगा मप्र

स्वदेश संवाददाता, भोपाल

» एंटीबायोटिक के दुरूपयोग रोकने जारी हुई पॉलिसी-

बीमारी को जल्द ठीक करने के चक्कर में डॉक्टर बेवजह एंटीबायोटिक लिख रहे हैं। इसका सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह है कि शरीर में एंटीबायोटिक का असर कम हो रहा है। यही नहीं आने वाली पीढ़ी के लिए खतरे की घंटी यह है कि दवाओं का असर हर साल 10 फीसदी की दर से कम हो रहा है। एंटीबायोटिक के बढ़ते खतरे को भांपते हुए सरकार ने एंटीबायोटिक पॉलिसी तैयार की है। शुक्रवार को इसे प्रस्तुत किया गया। इसके लिए तीन साल का एक्शन प्लान तैयार किया गया है। इस पॉलिसी में मुख्य रूप से एंटीबायोटिक दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करने के साथ ही डॉक्टरों को बेवजह एंटीबायोटिक लिखने से रोकना और लोगों अपनी मर्जी से यह दवा खरीदने से रोकना है। कार्यक्रम में स्वास्थ्य मंत्री तुलसी सिलावट ने कहा कि जानकारी के अभाव में अत्यधिक मात्रा में एंटीबायोटिक कारगर नहीं होती। एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस की रोकथाम के लिए कार्य-योजना जारी की गई है। इसे विभिन्न विभागों और चिकित्सकों के सहयोग से क्रियान्वित किया

स्वास्थ्य मंत्री के अलावा अन्य मंत्रियों ने नहीं समझा कार्यक्रम का महत्व: यह कार्यक्रम आमआदमी की सेहत के साथ ही जानवरों,पशु,पक्षियों और जलीय जीवों के साथ पर्यावरण और कृषि से जुड़ा हुआ था। इसके चलते कार्यक्रम में सात विभागों के मंत्रियों को बुलाया गया था। यह वह विभाग है जहां एंटीबायोटिक का उपयोग होता है।

यह होगा पॉलिसी में

- मेडिकल स्टोर से डॉक्टर के पर्चे के बिना दवा न मिले, इसके लिए सख्त नियम बनाए जाएंगे।
- एंटीबायोटिक व टीबी की दवाओं की बिक्री की मोबाइल एप से निगरानी की जाएगी।
- निजी व सरकारी अस्पताल में डॉक्टरों के पर्चों के कुछ नमूने लेकर ऑडिट कराई जाएगी।
- चिकन, मटन, अंडा, दूध आदि में एंटीबायोटिक्स की मात्रा पता करने के लिए साल भर के भीतर व्यवस्था की जाएगी।
- सभी मेडिकल कॉलेज व हर जिले में एक सरकारी लैब को एनएबीएल मापदंड पर लाया जाएगा।
- पशु और पशु उत्पादों में एंटीबायोटिक दवाओं का असर जानने के लिए निगरानी की जाएगी।

एंटीबायोटिक्स की प्रभावशीलता

एंटीबायोटिक	कितनी प्रभावी (प्रतिशत मे)
1. कोलिस्टिन	89
2. इंपीनेम	70
3. पिपरेसिलीन	64
4. क्लोरेम्फेनीकूल	63
5. जेंटामाइसिन	60
6. एजट्रियोनम	59
7. सेफ्टाजिडाइम	52
8. लीवोफ्लोक्सेसिन	52
9. डोरीपेनम	48
10. सिफि एक्सोन	46
11. मीरोपेनम	46
12. कोट्राइमोक्सेजोल	42
13. सिफेपाइम	40
14. सिफेजोलिन	26
15. एमॉक्सीसिलीन	17
16. एंपिसिलीन	12

ये रहे कार्यक्रम में मौजूद

स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख सचिव पल्लवी जैन गोविल,एनएचएम की मिशन संचालक छवि भारद्वाज,डब्ल्यूएचओ के प्रतिनिधि अनूप शर्मा,एनएचएम के संचालक डा.मोहन सिंह,डा.पंकज शुक्ला,एम्स के मेडिसिन विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डा.सागर खडंगा,राकेश मुंशी के अलावा स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी कर्मचारी गण मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन उपसंचालक डा.शैलेश साकल्ले ने किया।

पुरानी दवाएं फिर हुई प्रभावीं

कार्यक्रम में एनसीडीसी के डायरेक्टर सुदीप सिंह ने बताया कि एंटीबायोटिक के बेतहाशा उपयोग से इसका असर कम हो चुका है। वहीं कई शोध में यह भी सामने आ रहा है कि मौजूदा एंटीबायोटिक का असर तो कम हो गया लेकिन कई साल पहले चलन से बाहर हुई एंटीबायोटिक दवाएं फिर से असर कर रही हैं। सबसे ज्यादा उपयोग की जाने वाली एंटीबायोटिक जैसे एंपिसिलीन, एमॉक्सीसिलीन, सिफ जोलिन, सिफेप्राइम, सिफिएक्सोन आदि की प्रभावशीलता 50 प्रतिशत के नीचे पहुंच गई।

जानवरों में रोका जाएगा इसका प्रयोग

कार्यक्रम केइ्र दौरान बताया गया कि पोल्ट्री फ र्म में मुर्गों को जल्दी बड़ा करने के लिए, बड़ा अंडा देने, गायों का दूध बढ़ाने व बीमारियों से बचाने के लिए ह्यूमन एंटीबायोटिक दवाएं दी जाती हैं। मांस, गोबर व दूध के जरिए यह एंटीबायोटिक इंसानों में पहुंच रही है। चौंकाने वाली बात है कि करीब 48 फ ीसदी एंटीबायोटिक्स का उपयोग जानवरों में हो रहा है।

SWADESH BHOPAL RNI पं. सं. 38087/81 डाक पं. क्र. म.प्र. भोपाल/ 210/2018-20 प्रकाशक एवं मुद्रक राजेन्द्र शर्मा द्वारा श्री रेवा प्रकाशन लि. की ओर से प्राधिकृत ... प्र. लि. के
प्रधान सम्पादक- राजेन्द्र शर्मा , प्रबंध सम्पादक- अक्षत शर्मा, दूरभाष : संपादकीय- 0755- 4026501-2, व्यवस्था-0755- 2556189, 4026506-7, ई-मेल : swadeshbhopal@gmail.com

9:59 AM

अब डॉक्टर के पर्चे के बगैर नहीं मिलेंगी प्रदेश में एंटीबॉयोटिक दवाएं

केरल के बाद अब प्रदेश में भी लगेगी एंटीबायोटिक दवाओं के दुरुपयोग पर रोक, स्वास्थ्य मंत्री तुलसी सिलावट ने किया ऐलान

इसलिए पड़ी जरूरत

केरल ने एक घटना के बाद बनाया था प्लान

अपनाई जाएंगी ये नीतियां

10:06 AM
Scanned with CamScanner

Health Department to launch action plan for Containment of Antimicrobial Resistance today

- Main objective is to strengthen infection prevention and control in the community and reduce environmental contamination with resistant pathogens and antimicrobial residues

■ **Staff Reporter**

STATE action plan for Containment of Antimicrobial Resistance will be launched on Friday.

The action plan will be launched at RCPV Noronha Academy of Administration and Management. Tulsiram Silawat, Minister Public Health and Family Welfare, will be present as special guest on the occasion.

This action plan is developed by the Health Department in collaboration with Animal Husbandry, Fisheries, Agriculture and Environment departments.

SAP main objective is to strengthen infection prevention and control in the community and reduce environmental contamination with resistant pathogens and antimicrobial residues. Antimicrobial Resistance (AMR) is identified as a priority which focuses on improved awareness and understanding of AMR through effective communication, education and training.

This also helps strengthen knowledge and evidence through surveillance and laboratory strengthening. ... of infection through effective infection prevention and control to optimize the use of antimicrobials in human health, animals and food. The microbiology laboratories in hospitals will also promote investments for AMR activities, research and innovations for AMR containment.

The action plan will include health approach across defined strategic priorities including conducting online search for AMR in the state as well as activities for its containment.

This will also facilitate in regulations, antimicrobial consumption, use and antimicrobial innovations. Other eminent guest will include Vijay Laxmi Sadho Minister Culture Department, Medical Education and Ayush Department, Sajjan Singh Verma Minister Public Works and Environment Department, Lakhan Singh Yadav, Animal Husbandry Minister, Imrati Devi, Minister Women and Child Department, Mahendra Singh Sisodia, Minister Labour Department etc will be there. Higher officials of Health Department and other related departments are likely to participate. The event will start by 4 pm.

As per action plan within an year infrastructure and facilities will be developed to know antibiotics measures in chicken, meat and other animal products.

Within one year in all hospitals microbiology laboratory will be developed with equipped infrastructure. In these laboratories culture test can also be conducted. Besides, a special pan will be developed to control antibiotics usage in animals.

Experts warn against overuse of antibiotics

'Superbugs' Raise Anxiety Across Globe

TIMES NEWS NETWORK

Bhopal: Banking on a year-long data gathered at hospital, the All India Institute of Medical Sciences (AIIMS), will engage medical practitioners from across the state to promote rational use of antibiotics. The move comes on the heels of experts warning that a bacterium has evolved that fights drugs, particularly due to overuse.

"Imposing a rational antibiotic drug use policy is possible," said Dr Sarman Singh, AIIMS Bhopal director during a meeting of stakeholders on the occasion of World Antibiotic Awareness Week. It has been over a month since the state government rolled out its antibiotic policy.

WORLD ANTIBIOTIC AWARENESS WEEK

"Treatment of infections is becoming a challenge everyday due to increasing instances of antibiotic resistance due to lack of usage guidelines. Inappropriate use of antibiotics has given rise antibiotic resistance," explained Dr Pankaj Shukla, state nodal officer (quality assurance), National Health Mission, here on Wednesday.

An ongoing ICMR study in 20 places across India indicates about 5% infections in critically-ill patients are drug resistant.

"On the same lines, AIIMS would share information on drug resistance across various regions in MP. A mobile application is also being developed that would help doctors determine best possible use of an antibiotic," explained Dr UK Dubey, hospital administration joint director, AIIMS Bhopal.

Some antibiotics have lost their efficacy and the pipeline of new antibiotics has been running dry.

Superbugs — resistant to more than one antibiotic — are springing up across the globe, experts said.

POINT OF NO RETURN

Antibiotics are drugs used to treat bacterial infections

What is antibiotic resistance It's the resistance of an antibiotic drug that was originally effective in treating infections caused by bacteria

CAUSES
- Over-prescribing of antibiotics
- Patients not completing their treatment
- Overuse of antibiotics in livestock and fish farming
- Poor infection control in hospitals and clinics
- Lack of hygiene and poor sanitation
- Lack of new antibiotics being developed

MEASURES TO CHECK RESISTANCE

Doctor | Prescribe responsibly and only when necessary

Patients | Don't buy medicines without prescription; complete the course of treatment

Govt | Strictly monitor and regulate over-the-counter sale and purchase

'Need regulatory mechanism for drugs'

Experts warn that poor infection control and lack of rational use of antibiotics may soon make ICUs a hot bed of infections. "Private doctors follow a dictum of treatment — hit hard and hit first, a regime. We do not have any regulatory mechanism for antibiotic use," said Dr Sanjay Gupta, nephrologist at the Aradhana Kidney Hospital, adding that the meeting of stakeholders at AIIMS Bhopal was a first.

"Until now, antibiotic resistance has not been on the agenda. There needs to be a dedicated programme for sensitization over the issue," he said. Carbapenems, polymyxin and colistin should be kept in a low-use zone and used as the last resort for critically-ill patients to ensure they don't become redundant, said experts.

Govt to focus on rational use of antibiotics: A government expert, who attended the meeting on 'antibiotic awareness' here on Wednesday said that the commission for doctors was not the focus, but avoiding use of reserved antibiotics was the aim. "No matter what, doctors would still get commission," said an expert. TNN

एंटीबायटिक्स के खतरों से डॉक्टरों को आगाह कर रहे हैं डॉ. पंकज शुक्ला और डॉ. सागर

सर्दी-खांसी में भी एंटीबायटिक्स का सेवन हो सकता है खतरनाक!

विजय एस. गौर • भोपाल
मो.नं. 9425493055

पीपुल्स समाचार स्पेशल

जरा सी सर्दी और खांसी के साथ बुखार आने पर एंटीबायटिक्स देने वाले डॉक्टरों को ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसकी जरुरत ही नही होती है। बेहतर हो कि रोगों को पहचानने के बाद निर्धारित दवाओं का ही इस्तेमाल किया जाए।

यही संदेश प्रदेशभर के डॉक्टरों को देने में नेशनल हेल्थ मिशन के स्टेट नोडल अधिकारी डॉ. पंकज शुक्ला और एम्स के डॉ. सागर खडंगा लगे हुए हैं। इसमें एम्स के निदेशक प्रो. सरमन सिंह के निर्देश पर मायक्रोबायलॉजी और मेडिसिन डिपार्टमेंट की टीम लगी है। डॉक्टर शुक्ला और डॉ सागर की यह जोड़ी एंटीबायटिक्स अवेयरनेस (एंटीबायटिक्स स्टीवर्डशिप) के तहत प्रदेश में मास्टर ट्रेनर तैयार कर रही है। इसके लिए संभागवार ट्रेनिंग प्रोग्राम तैयार किए गए हैं, जिसमे तहत 10 दिसंबर को ग्वालियर संभाग के 53 शासकीय चिकित्सकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। यह 53 डॉक्टर अब अपने-अपने जिलों और क्षेत्र में एंटीबायटिक्स स्टीवर्डशिप को बढ़ाएंगे। इसके बाद 28 दिसंबर को इंदौर, 2 जनवरी 2019 को जबलपुर और 15 जनवरी 2019 को भोपाल एम्स में डॉक्टरों की ट्रेनिंग होगी। इसके बाद उज्जैन, सागर और रीवा संभाग में डॉक्टरों की ट्रेनिंग होगी।

डॉ. पंकज शुक्ला और एम्स के डॉ. सागर खडंगा की जोड़ी।

चौंकाने वाले तथ्य
- मप्र की अभी तक अपनी कोई स्टेट एंटीबायटिक्स पॉलिसी ही नही है।
- सर्दी, खांसी, बुखार आदि में जरुरत नहीं होने के बाद भी डॉक्टर लिखते हैं।
- कई बार मरीज के दबाव में आकर भी डॉक्टर एंटीबायटिक्स लिख देते हैं।

इनमें एंटीबायटिक्स की जरूरत नही
- सामान्य सर्दी, खांसी-बुखार
- डेंगू या सामान्य फ्लू
- चिकनगुनिया
- डायरिया

ऐसे बनी पंकज और सागर की जोड़ी

एंटीबायटिक्स के अंधाधुंध इस्तेमाल को रोकने डॉ. सागर अवेयरनेस प्लानिंग लेकर डॉ. शुक्ला से मिले। इस पर डॉ. शुक्ला ने तुरंत ही प्रदेशभर में अवेयरनेस का चार्ट तैयार कर शुरुआत करवाई, वहीं प्रदेश के हेल्थ महकमे को भी जोड़ा। अब इस जोड़ी की कोशिश है कि प्राइवेट प्रैक्टिस करने वाले डॉक्टर, क्लीनिक, अस्पताल भी ट्रेनिंग प्रोग्राम से जुडें।

डायरिया में 61% डॉक्टर लिखते हैं एंटीबायटिक्स

एंटीबायटिक्स के बढ़ते इस्तेमाल का खुलासा हमीदिया अस्पताल के पीएसएम डिपार्टमेंट की रिसर्च से हुआ है कि सिर्फ भोपाल में ही डायरिया के केस में 61% डॉक्टर एंटीबायटिक्स लिखते हैं। हालांकि डायरिया में इसकी कोई जरूरत नहीं होती है। यह रिसर्च सिर्फ सरकारी डॉक्टरों पर की गई यानी प्राइवेट डॉक्टरो को भी शामिल किया जाए तो एंटीबायटिक्स लिखने वाले डॉक्टरों का ग्राफ बढ़ना तय है।

स्टेट पॉलिसी ही नही

अभी तक मप्र की अपनी कोई एंटीबायटिक्स पॉलिसी ही नही है। ऐसे में डॉक्टरों की टीम ने इस पर काम किया और सजेस्टिव पॉलिसी बनाकर सरकार को सौंपी, जिसके बाद ही पहली एंटी बायटिक्स पॉलिसी का ड्राफ्ट तैयार हो सका। इसी को बीते 24 सितंबर 2018 को आयुष्मान भारत योजना के साथ लांच किया जा चुका है। इसमें भी कई कमियां होने से इसको अद्यतन करने पर काम चल रहा है।

NEW PILLS NOT MADE AFTER 2008

'No antibiotic will work after 5 years'

OUR STAFF REPORTER
Indore

"Over use of antibiotics has made people resistant to drugs. As a result, no antibiotic will work after five years," said Dr Pankaj Shukla, the joint director (quality assurance) National Health Mission.

Talking to mediapersons on Friday on sidelines of training programme for doctors on antibiotic policy, Dr Shukla said, "74 percent of government hospitals and 70 percent of private hospitals prescribe antibiotics to patients even when not required. Antibiotics are not required in 90 percent of diseases but are given to patients to increase business."

He said overuse of antibiotic is a major concern as people take antibiotics over the counter and pharmacists sell for earning profit.

"No new antibiotics have been made after 2008. Over consumption of existing antibiotics will make people ill instead of curing them," Dr Sagar Khadanga of AIIMS, Bhopal, remarked. He said use of antibiotic in veterinary hospitals has increased due to which those having non-vegetarian food develop resistance to antibiotics. "Veterinary doctors are giving antibiotics to goat and hen. Consumption of their meat is affecting people's health," Dr Khadanga said.

Meanwhile, training programme nodal officer Dr Amit Malakar said state government has approved an antibiotic policy few months back and will be implemented to save people from developing resistance to life-saving drugs.

बेवजह हेवी डोज के कारण एंटीबायोटिक दवाएं काम नहीं करतीं, जेपी सहित 11 अस्पतालों में होगी स्टडी

पीपुल्स संवाददाता • भोपाल
मो.नं. 9826968651

छोटी-छोटी बीमारियों में भी एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग नुकसानदेह साबित हो रहा है। इंसानों में ही नहीं, बल्कि पोल्ट्री फार्म, एग्रीकल्चर, हॉर्टीकल्चर, वेटरनरी के क्षेत्र में भी बेतहाशा एंटीबायोटिक का उपयोग पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहा है।

एंटीबायोटिक दवाओं के दुरुपयोग को रोकने और इसका असर जांचने के लिए जेपी अस्पताल सहित मप्र के 11 अस्पतालों में मरीजों के सैंपल से कल्चर टेस्ट कर ये पता लगाया जाएगा कि किस बैक्टीरिया पर कौन सी दवा प्रभावी है और कौन सी एंटीबायोटिक निष्प्रभावी हो रही हैं। इसके बाद मप्र में स्टैंडर्ड ट्रीटमेंट गाइडलाइन बनाई जाएगी। यह जानकारी गुरुवार को एनएचएम में एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस (एएमआर) के स्टेट एक्शन प्लान को लेकर आयोजित कार्यक्रम में एनएचएम के संचालक डॉ. पंकज शुक्ला ने दी। कार्यक्रम में मिशन की प्रबंध संचालक प्रियंका दास सहित तमाम विशेषज्ञ मौजूद थे।

डॉ. प्रभुराम चौधरी

जल्द बनेगी सख्त नीति: स्वास्थ्य मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी ने एंटीबायोटिक दवाओं के ज्यादा सेवन पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि इसे रोकने के लिए जल्द ही सख्त नीति लागू की जाएगी। अब बहुत सी एंटीबायोटिक बेअसर हैं। इनके बेअसर होने की रफ्तार ऐसी ही रही, तो कीमोथैरेपी, अंगों का प्रत्यर्पण, जोड़ों का रिप्लेसमेंट और प्रीमैच्योर बच्चों की देखभाल मुश्किल हो जाएगी।

पुरानी एंटीबायोटिक का असर बढ़ा

विशेषज्ञों ने बताया कि अधिकतर नई एंटीबायोटिक दवाओं का असर खत्म हो गया है। हालांकि, राहत की बात है यह कि पुरानी एंटीबायोटिक दवाएं, जो सालों पहले निष्प्रभावी हो चुकी हैं, उनका असर बढ़ रहा है। उनके अनुसार, कुछ साल पहले एम्स में किए गए एक शोध में यह साबित भी हो चुका है।

चिकन का शौक भी नुकसानदेह

पशु रोग विशेषज्ञ डॉ. असित श्रीवास्तव के मुताबिक, चिकन या मांसाहार का ज्यादा सेवन करने वालों पर भी एंटीबायोटिक का असर कम होता है। दरअसल, चिकन या अन्य जानवरों को जल्दी बड़ा करने के लिए एंटीबायोटिक इंजेक्शन दिए जाते हैं। इनसे यह एंटीबायोटिक मानव शरीर में पहुंच रहे हैं।

AIIMS spreads awareness on perils of excessive antibiotics

Training to continue for doctors to ensure appropriate meds are prescribed

DB Post Correspondent

l: Inappropriate use of an…s is a growing concern and …ruse is becoming ineffec… …scussed medical specialists …eting organised by AIIMS …boration with Indian Coun… Medical research (ICMR), …elhi and National Health …n (NHM).

…event was organised to …World Antibiotic Awareness …WAAW) observed from November 12 to November 18. While addressing the event, AIIMS director Prof Sarman Singh said, "To control the overuse of antibiotics, it will be mandatory for chemists to provide antibiotics only to patients with proper prescription."

Dr Singh also announced that AIIMS, Bhopal in association with NHM and department of health will continue the work to train doctors in district hospitals.

ICMR scientist Dr Kamini Waliya said, "The weak regulations of antibiotic medicines across nation can be resolved by change in policies." Bhopal Chemist Association president Lalit Jain said lack of awareness and self medication is the root cause of problems.

SOFTWARE TO TRACK PRESCRIPTIONS
- **To keep** proper record of antibiotics distribution from medical stores at local and wholesale level, a software has been developed by health department.
- **It will** help capture information like name of doctors who prescribed the medicine and name of chemist providing the medicine.
- **The software** will also ensure that antibiotics are not provided to patients by retailer pharmacists without a prescription.

विशेषज्ञ बोले- सर्दी, खांसी समेत 90 फीसदी बीमारी में एंटीबायोटिक की जरूरत नहीं, फिर भी देते हैं डॉक्टर

प्रदेश में एंटीबायोटिक पॉलिसी लागू करने के लिए डॉक्टरों का एक दिनी प्रशिक्षण

भास्कर संवाददाता | इंदौर

एंटीबायोटिक दवाइयों का इन दिनों धड़ल्ले से इस्तेमाल हो रहा है, जबकि 90 प्रतिशत बीमारियों में इसकी जरूरत नहीं होती। इसके बावजूद डॉक्टर इसे लिख देते हैं। लोग भी स्टोर से खरीद कर खा लेते हैं। वे यह नहीं समझते कि आने वाले दिनों में यह उन पर असर करना बंद कर देगी।

यह जानकारी एम्स भोपाल के डॉ. सागर खडंगा ने शुक्रवार को क्षेत्रीय परिवार कल्याण प्रशिक्षण केंद्र में एंटीबायोटिक पॉलिसी को लागू करने के लिए डॉक्टरों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में कही। उन्होंने कहा कि सर्दी, जुकाम, खांसी, दस्त और बुखार में एंटीबायोटिक दवा नहीं देना चाहिए। इसे कब, कितना और कितने अंतराल में दिया जाए, यह जानना जरूरी है। भारत सरकार और डब्ल्यूएचओ ने मिलकर एक गाइड लाइन बनाई है कि किन बीमारियों में यह जरूरी है और किन बीमारियों में नहीं। उन्होंने बताया कि वर्ष 2009 के बाद से भारत में कोई एंटीबायोटिक दवा ही नहीं बनी है। जिला नोडल अधिकारी डॉ. अमित मालाकार ने बताया कि अगले चरण में मेडिकल ऑफिसर्स को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

जागरूकता सप्ताह आईसीएमआर, एम्स और एनएचएम ने दवाओं का दुरुपयोग रोकने के लिए शुरू की पहल, एप बताएगा कैसे हो उपयोग

बिना पर्चा नहीं मिलेगी एंटीबायोटिक, एक साल में होगा अमल

डॉक्टरों को दी जाएगी ट्रेनिंग

दुरुपयोग रोकना इसलिए जरूरी
- एम्स भोपाल में दो साल पहले हुई स्टडी में सामने आया था कि दवाओं का असर तेजी से कम हो रहा है।
- झोलाछाप डॉक्टर मरीज को जल्दी ठीक करने के लिए साधारण बीमारी में भी हाई एंटीबायोटिक देते हैं।
- मरीज अपनी मर्जी से अनुचित दवा खरीदते हैं। साथ ही डॉक्टर द्वारा लिखी दवा का कोर्स पूरा नहीं करते।

Training of Trainers

- Collaborated with
  - AIIMS Bhopal
  - ICMR
- Trained 2000 Doctors
- At various centers
  - Gwalior
  - Indore
  - Jabalpur
  - Bhopal
  - Sagar
  - Rewa
  - Ujjain

2. Knowledge & evidence

- Laboratories
- Surveillance of AMR

Laboratories

- Earmarked 12 hospitals for antimicrobial survey across the state
- Establish quality control systems for antibiotics
- 10 Antimicrobial Testing labs to be set up across the state
- State food lab for animal fodder will be set up
- Developing 22 Labs for AMR surveillance in Veterinary Department
- Divisional level microbiology labs will be established in all Medical colleges.

Surveillance

- environment surveillance
- food surveillance in animal food and milk
- Nursing home data survey
- Antibiogram developed
- Prescription Audits instituted
- Adapt National AMR surveillance standards/SOPs for Madhya Pradesh

3. Infection prevention & control

IPC in Healthcare

IPC in animal sector/farms, community & environment

IPC in Human Health

- Hospital infection Control Committees instituted at every facility
- Regular trainings conducted on PPE,BMW management, infection control
- Quality interventions like Kayakalp and NQAS for ensuring quality assurance.
- Strengthening of hospital upkeep/sanitation/infection prevention practices through continuous training
- Ensured Disposable linen/PPE at the time COVID-19
- Develop Regular **HAI surveillance** system at facility level
- Develop IPC & BMWM Guideline for prevention of COVID-19

❖ Due to good IPC Health Care Workers did not acquire hospital infections, no secondary bacterial infections reported during COVID

3. Infection prevention & control

IPC in Healthcare

IPC in animal sector/farms, community & environment

IPC in animal sector/farmers/community and environment

- State level workshop for participatory approach
- Nodal persons in Veterinary in Districts identified
- Revision of guidelines by departments
- Human and Veterinary drugs Quality certification.
- Drug availability after quality certification.
- Soil and affluent water testing.
- Medical Colleges will be linked with WHO net
- State Controller Food & Drugs Madhya Pradesh Department has developed H1 Reporting Module

4. Optimize use

Regulations

Hospitals

Animals and Food

Regulations

- Schedule H1 drugs will not be available OTC without prescription
- New drugs will be added to the schedule H1monitoring app other than TB drugs

Hospitals/Animal and Food

- Will monitor misuse of Antibiotics in poultry industry, fisheries, horticulture and agriculture departments

Schedule H1 Drugs

"Schedule H1"
(See rules 65 and 97)

1. Alprazolam
2. Balofloxacin
3. Buprenorphine
4. Capreomycin
5. Cefdinir
6. Cefditoren
7. Cefepime
8. Cefetamet
9. Cefixime
10. Cefoperazone
11. Cefotaxime
12. Cefpirome
13. Cefpodoxime
14. Ceftazidime
15. Ceftibuten
16. Ceftizoxime
17. Ceftriaxone
18. Chlordiazepoxide
19. Clofazimine
20. Codeine
21. Cycloserine
22. Diazepam
23. Diphenoxylate
24. Doripenem
25. Ertapenem
26. Ethambutol Hydrochloride
27. Ethionamide
28. Feropenem
29. Gemifloxacin
30. Imipenem
31. Isoniazid
32. Levofloxacin
33. Meropenem
34. Midazolam
35. Moxifloxacin
36. Nitrazepam
37. Pentazocine
38. Prulifloxacin
39. Pyrazinamide
40. Rifabutin
41. Rifampicin
42. Sodium Para-aminosalicylate
43. Sparfloxacin
44. Thiacetazone
45. Tramadol
46. Zolpidem

"Schedule H1" की दवा के पृथक रजिस्टर का प्रारूप

S.No.	Date	Name of Prescriber Dr. Name and Add..	Patient Name	Name of Drug & No.	Bill No.. Quienty Sold

5.
Innovations R&D

Research

Innovations

Research and Innovation

- AIIMS is updating antibiogram (DH/ NH)→ New policy in 2022
- FDA will use software for monitoring Antibiotic sale

Glimpse of monitoring Software

5 Application Flow

The application is designed to have 2 types of users to solve the purpose. The hierarchy of user account is as follows:

5.1 Data Flow

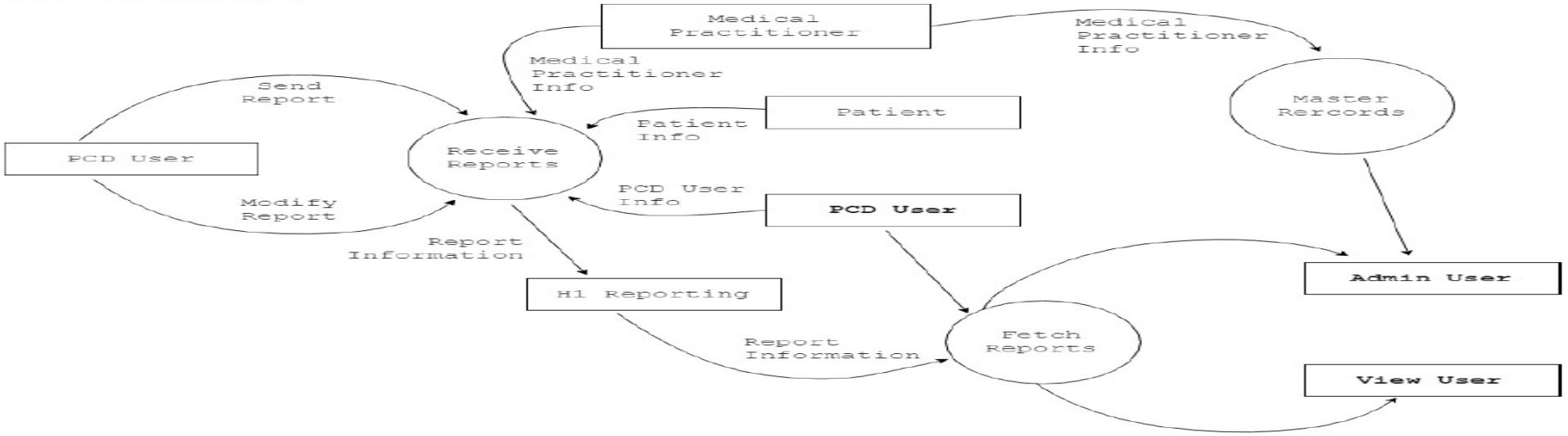

6. Collaborations

- Governance
- State level collaborations
- Inter sectoral mechanisms

Governance/ Collaboration/ Inter-sectoral coordination

- WHO, NCDC, ICMR
- AIIMS, Nursing home association, Chemist association
- <u>One health approach:</u> Inter-sectoral convergence with Dept of Veterinary, agriculture, FDA

Governance/ Collaboration/ Inter-sectoral coordination- Stakeholder awareness workshop

WAAW 18th-24 Nov2021

Private sector→ training and data collection

AIIMS Bhopal and ICMR

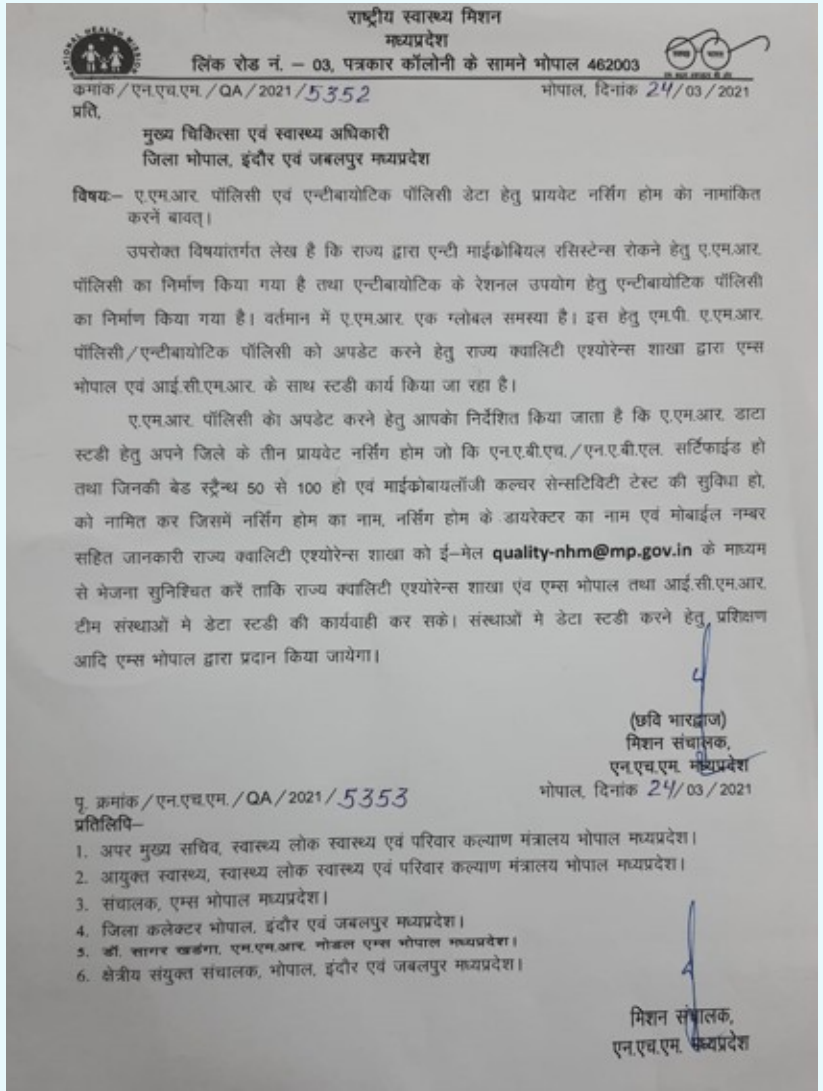

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन
मध्यप्रदेश
लिंक रोड नं. – 03, पत्रकार कॉलोनी के सामने भोपाल 462003

क्रमांक/एन.एच.एम./QA/2021/5352 भोपाल, दिनांक 24/03/2021

प्रति,

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी
जिला भोपाल, इंदौर एवं जबलपुर मध्यप्रदेश

विषयः– ए.एम.आर. पॉलिसी एवं एन्टीबायोटिक पॉलिसी डेटा हेतु प्रायवेट नर्सिंग होम को नामांकित करने बावत्।

उपरोक्त विषयांतर्गत लेख है कि राज्य द्वारा एन्टी माईक्रोबियल रसिस्टेन्स रोकने हेतु ए.एम.आर. पॉलिसी का निर्माण किया गया है तथा एन्टीबायोटिक के रेशनल उपयोग हेतु एन्टीबायोटिक पॉलिसी का निर्माण किया गया है। वर्तमान में ए.एम.आर. एक ग्लोबल समस्या है। इस हेतु एम.पी. ए.एम.आर. पॉलिसी/एन्टीबायोटिक पॉलिसी को अपडेट करने हेतु राज्य क्वालिटी एश्योरेन्स शाखा द्वारा एम्स भोपाल एवं आई.सी.एम.आर. के साथ स्टडी कार्य किया जा रहा है।

ए.एम.आर. पॉलिसी को अपडेट करने हेतु आपको निर्देशित किया जाता है कि ए.एम.आर. डाटा स्टडी हेतु अपने जिले के तीन प्रायवेट नर्सिंग होम जो कि एन.ए.बी.एच./एन.ए.बी.एल. सर्टिफाईड हो तथा जिनकी बेड स्ट्रैन्थ 50 से 100 हो एवं माईक्रोबायलॉजी कल्चर सेन्सटिविटी टेस्ट की सुविधा हो, को नामित कर जिसमें नर्सिंग होम का नाम, नर्सिंग होम के डायरेक्टर का नाम एवं मोबाईल नम्बर सहित जानकारी राज्य क्वालिटी एश्योरेन्स शाखा को ई–मेल **quality-nhm@mp.gov.in** के माध्यम से भेजना सुनिश्चित करें ताकि राज्य क्वालिटी एश्योरेन्स शाखा एंव एम्स भोपाल तथा आई.सी.एम.आर. टीम संस्थाओं मे डेटा स्टडी की कार्यवाही कर सकें। संस्थाओं मे डेटा स्टडी करने हेतु प्रशिक्षण आदि एम्स भोपाल द्वारा प्रदान किया जायेगा।

(छवि भारद्वाज)
मिशन संचालक,
एन.एच.एम. मध्यप्रदेश

पृ. क्रमांक/एन.एच.एम./QA/2021/5353 भोपाल, दिनांक 24/03/2021

प्रतिलिपि–

1. अपर मुख्य सचिव, स्वास्थ्य लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भोपाल मध्यप्रदेश।
2. आयुक्त स्वास्थ्य, स्वास्थ्य लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भोपाल मध्यप्रदेश।
3. संचालक, एम्स भोपाल मध्यप्रदेश।
4. जिला कलेक्टर भोपाल, इंदौर एवं जबलपुर मध्यप्रदेश।
5. डॉ. सागर खडंगा, एम.एम.आर. नोडल एम्स भोपाल मध्यप्रदेश।
6. क्षेत्रीय संयुक्त संचालक, भोपाल, इंदौर एवं जबलपुर मध्यप्रदेश।

मिशन संचालक,
एन.एच.एम. मध्यप्रदेश

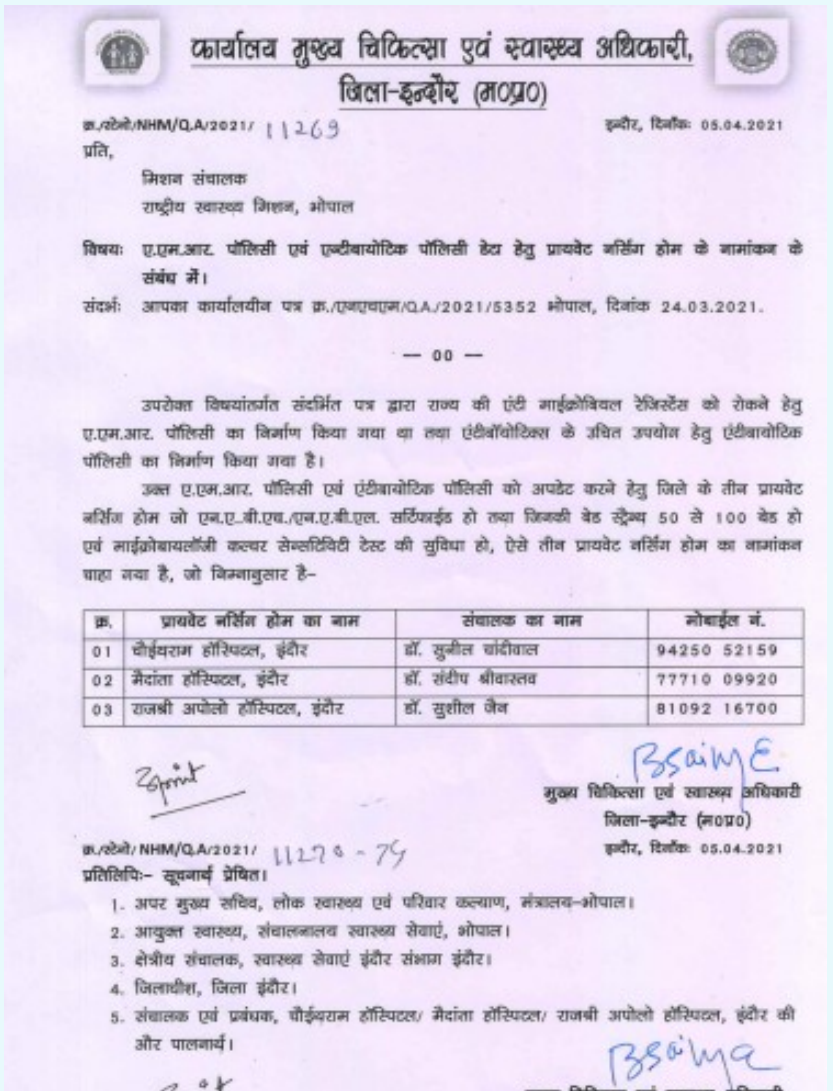

कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी,
जिला–इन्दौर (म0प्र0)

क्र./स्टेनो/NHM/Q.A/2021/ 11269 इन्दौर, दिनांक 05.04.2021

प्रति,

मिशन संचालक
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, भोपाल

विषयः ए.एम.आर. पॉलिसी एवं एन्टीबायोटिक पॉलिसी डेटा हेतु प्रायवेट नर्सिंग होम के नामांकन के संबंध में।

संदर्भः आपका कार्यालयीन पत्र क्र./एनएचएम/Q.A./2021/5352 भोपाल, दिनांक 24.03.2021.

— 00 —

उपरोक्त विषयांतर्गत संदर्भित पत्र द्वारा राज्य की एंटी माईक्रोबियल रेजिस्टेंस को रोकने हेतु ए.एम.आर. पॉलिसी का निर्माण किया गया था तथा एंटीबॉयोटिक्स के उचित उपयोग हेतु एंटीबायोटिक पॉलिसी का निर्माण किया गया है।

उक्त ए.एम.आर. पॉलिसी एवं एंटीबायोटिक पॉलिसी को अपडेट करने हेतु जिले के तीन प्रायवेट नर्सिंग होम जो एन.ए.बी.एच./एन.ए.बी.एल. सर्टिफाईड हो तथा जिनकी बेड स्ट्रेंथ 50 से 100 बेड हो एवं माईक्रोबायलॉजी कल्चर सेन्सटिविटी टेस्ट की सुविधा हो, ऐसे तीन प्रायवेट नर्सिंग होम का नामांकन चाहा गया है, जो निम्नानुसार है–

क्र.	प्रायवेट नर्सिंग होम का नाम	संचालक का नाम	मोबाईल नं.
01	चोईथराम हॉस्पिटल, इंदौर	डॉ. सुनील चांदीवाल	94250 52159
02	मेदांता हॉस्पिटल, इंदौर	डॉ. संदीप श्रीवास्तव	77710 09920
03	राजश्री अपोलो हॉस्पिटल, इंदौर	डॉ. सुशील जैन	81092 16700

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी
जिला–इन्दौर (म0प्र0)

क्र./स्टेनो/NHM/Q.A/2021/ 11270-75 इन्दौर, दिनांक 05.04.2021

प्रतिलिपिः– सूचनार्थ प्रेषित।

1. अपर मुख्य सचिव, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, मंत्रालय–भोपाल।
2. आयुक्त स्वास्थ्य, संचालनालय स्वास्थ्य सेवाएं, भोपाल।
3. क्षेत्रीय संचालक, स्वास्थ्य सेवाएं इंदौर संभाग इंदौर।
4. जिलाधीश, जिला इंदौर।
5. संचालक एवं प्रबंधक, चोईथराम हॉस्पिटल/ मेदांता हॉस्पिटल/ राजश्री अपोलो हॉस्पिटल, इंदौर की ओर पालनार्थ।

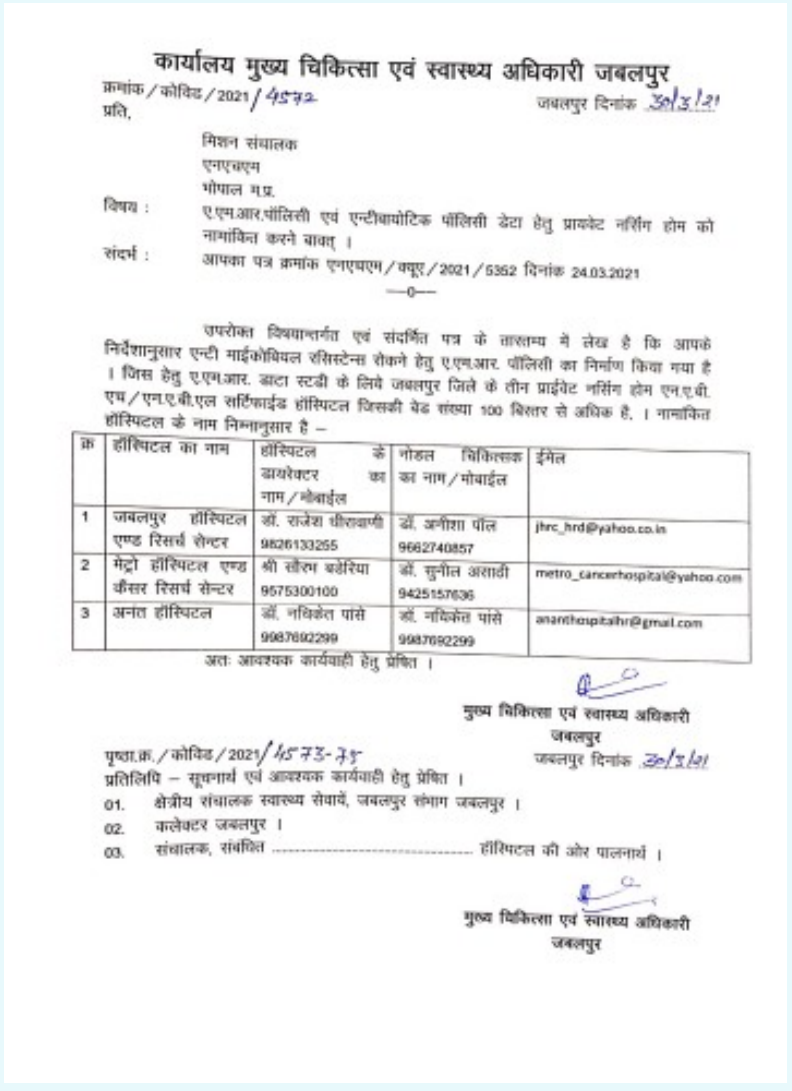

कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जबलपुर

क्रमांक/कोविड/2021/4572 जबलपुर दिनांक 30/3/21

प्रति,

मिशन संचालक
एनएचएम
भोपाल म.प्र.

विषय : ए.एम.आर.पॉलिसी एवं एन्टीबायोटिक पॉलिसी डेटा हेतु प्रायवेट नर्सिंग होम को नामांकित करने बावत् ।

संदर्भ : आपका पत्र क्रमांक एनएचएम/क्यूए/2021/5352 दिनांक 24.03.2021

—0—

उपरोक्त विषयान्तर्गत एवं संदर्भित पत्र के तारतम्य में लेख है कि आपके निर्देशानुसार एन्टी माईक्रोबियल रसिस्टेन्स रोकने हेतु ए.एम.आर. पॉलिसी का निर्माण किया गया है । जिस हेतु ए.एम.आर. डाटा स्टडी के लिये जबलपुर जिले के तीन प्राईवेट नर्सिंग होम एन.ए.बी.एच/एन.ए.बी.एल सर्टिफाईड हॉस्पिटल जिसकी बेड संख्या 100 बिस्तर से अधिक है. । नामांकित हॉस्पिटल के नाम निम्नानुसार है –

क्र	हॉस्पिटल का नाम	हॉस्पिटल के डायरेक्टर का नाम/मोबाईल	नोडल चिकित्सक का नाम/मोबाईल	ईमेल
1	जबलपुर हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर	डॉ. राजेश धीरावाणी 9826133255	डॉ. अनीशा पॉल 9662740857	jhrc_hrd@yahoo.co.in
2	मेट्रो हॉस्पिटल एण्ड कैंसर रिसर्च सेन्टर	श्री सौरभ बडेरिया 9575300100	डॉ. सुनील असाटी 9425157636	metro_cancerhospital@yahoo.com
3	अनंत हॉस्पिटल	डॉ. नचिकेत पासे 9987692299	डॉ. नचिकेत पासे 9987692299	ananthospitalhr@gmail.com

अतः आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित ।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी
जबलपुर

पृष्ठा.क्र./कोविड/2021/4573-75 जबलपुर दिनांक 30/3/21

प्रतिलिपि – सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित ।

01. क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य सेवायें, जबलपुर संभाग जबलपुर ।
02. कलेक्टर जबलपुर ।
03. संचालक, संबंधित .... हॉस्पिटल की ओर पालनार्थ ।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी
जबलपुर

FDA→ Pharmacy association

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन
मध्यप्रदेश
लिंक रोड नं. – 03, पत्रकार कॉलोनी के सामने भोपाल 462003

कमांक/एन.एच.एम./QA/2021/ भोपाल, दिनांक.....

प्रति,

डॉ. सागर खडंगा
ए.एम.आर. नोडल
एम्स भोपाल

विषयः– एम.पी.ए.एम.आर कार्यशाला मे उपस्थित होने बावत्।

उपरोक्त विषयांतर्गत लेख है कि मध्यप्रदेश द्वारा एन्टी माईक्रोबियल रसिस्टेन्स रोकने हेतु एम्स भोपाल के सहयोग से एम.पी.ए.एम.आर स्टेट एक्शन प्लान का निर्माण किया गया है। एम. पी.ए.एम.आर स्टेट एक्शन प्लान का निर्माण उपरांत समुचित कियान्वयन हेतु मध्यप्रदेश द्वारा निरंतर सभी स्टेक होल्डर के साथ कार्यशाला आयोजित कर स्टेट एक्शन प्लान को प्रभावी रूप से लागू किया जा रहा है। इस हेतु निम्नानुसार कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें आपसे अनुरोध है कि उपस्थित होकर के प्रशिक्षण प्रदान करने का कष्ट करें।

दिनांक व समय	कार्यशाला का नाम	स्थान
10.03.2021 सायं 05 से 09 बजे तक	ए.एम.आर. पॉलिसी मे फॉर्मासिस्ट एसोसिएशन/केमिस्ट को प्रशिक्षित करना।	होटल लेक व्यू भोपाल
12.03.2021 सुबह 10 बजे से सायं 05 बजे तक	ए.एम.आर. पॉलिसी मे वेटनरी विभाग के चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान करना	प्रशासनिक अकादमी भोपाल
21.03.2021 सुबह 10 बजे से सायं 05 बजे तक	ए.एम.आर. पॉलिसी मे प्रायवेट/शासकीय पीडियाट्रिक विभाग के चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान करना	होटल पलाश भोपाल

(डॉ. पंकज शुक्ला)
अपर संचालक,
एन.एच.एम.भोपाल

पृ. क्रमांक/एन.एच.एम./QA/2021/ भोपाल, दिनांक .....

प्रतिलिपि–

1. प्रमुख सचिव, स्वास्थ्य लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भोपाल मध्यप्रदेश।
2. आयुक्त स्वास्थ्य, स्वास्थ्य लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भोपाल मध्यप्रदेश।
3. मिशन संचालक, एन.एच.एम. भोपाल मध्यप्रदेश।
4. अपर मिशन संचालक, एन.एच.एम. भोपाल मध्यप्रदेश।
5. संचालक, एम्स भोपाल मध्यप्रदेश।

अपर संचालक,
एन.एच.एम.भोपाल

Veterinary sector

K-11011/6/2021-Cattle Div.
Government of India
Ministry of Fisheries, Animal Husbandry & Dairying
Department of Animal Husbandry & Dairying

Krishi Bhavan, New Delhi
Dated: 13th November 2021

Sub World Antimicrobial Awareness Week 2021.

Antimicrobials – including antibiotics, antivirals, antifungals and antiparasitic – are medicines used to prevent and treat infections in humans, animals and plants. However, due to overuse and misuse, these medicines are no longer effective for treatment of such infections thereby leading to the development of Antimicrobial Resistance (AMR). This antimicrobial resistance makes infections harder to treat, which increases the risk of disease spread, severe illness and death.

In order to create awareness about AMR and to encourage good animal husbandry practices among the general public, livestock farmers, veterinary professional and paraprofessionals and policy makers every year the World Antimicrobial Awareness Week is celebrated from 18th to 24th November. The AMR Tripartite organizations - the Food and Agriculture Organization of the United Nations (FAO), the World Organisation for Animal Health (OIE) and the World Health Organization (WHO) – have announced the theme of World Antimicrobial Awareness Week (WAAW) 2021 as 'Spread Awareness, Stop Resistance'. The overarching slogan of World Antimicrobial Awareness Week continues to be 'Antimicrobials: Handle with Care'.

This year during the WAAW 2021 from 18th to 24th November 2021, the Department of Animal Husbandry & Dairying has planned a series of activities involving all stakeholders like Awareness Programme for Farmers, veterinary professional and paraprofessionals,

Agenda for Veterinary AMR Orientation Program

Sl no	Topic	Speaker	Time
	Introduction	Mr. Ramteke	10.00 AM to 10.30 AM
	MP state Action Plan	Dr. Pankaj Shukla	10.30 to 11.00 AM
	Antibiotics and Animal care: The problem Statement	Dr. Sagar Khadanga	11.00 to 11.10 AM
	Remarks: ACS Health		11.15 to 11.30
	Remarks: ACS Veterinary Animal Husbandry		11.30 to 11.45
	Veterinary Council		11.45 to 12.15
	Veterinary Lab		12.15 to 12.45
	Lunch Break		
	Group Activity		1.30 to 2.30
	Group Presentation 10 min each group X 10 groups		2.30 to 4.30
	Action plan for 2021-2022		4.30 to 4.50
	Vote of Thanks		4.50 to 5.00

MP-AMR-Policy अन्तर्गत पशुपालन विभाग द्वारा की गई कार्यवाही।

1. पशुपालन विभाग द्वारा प्रत्येक जिले में MP-AMR-Policy के कियान्वयन हेतु nodal officer को चिन्हित किया गया है।

2. जिल स्तरीय nodal officers द्वारा जिलों के विभिन्न पशु चिकित्सको को MP-AMR-Policy के कियान्वयन संबंधी प्रशिक्षण दिया गया है।

3. AMR-Surveillance कार्य अंतर्गत राज्य पशु रोग अन्वेषण प्रयोगशाला,भोपाल द्वारा ABST study की गई है जिसके अनुसार पशुओं में Gentamicin, Co trimoxazole, tetracyclin, cephotaxim,chloramphenicol के विरूद्व अधिक resistance पाया गया है।

4. संयुक्त संचालक रोग अन्वेषण प्रयोगशाला भोपाल द्वारा राज्य पशुरोग अन्वेषण प्रयोगशाला एवं संभागीय तथा जिला स्तरीय पशु रोग अन्वेषण प्रयोगशालाओं के लिए equipments/instruments/ chemicals क्य हेतु "Surveillance of Antimicrobial Resistance in Animals and poultry in Madhya Pradesh" प्रोजेक्ट कुल राशि रूपए 24.00 लाख प्रस्तुत किया था जो कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन से उपलब्ध कराए जाने हेतु लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग को प्रेषित किया गया है।

5. पशुओं में संक्रामक रोगों के नियंत्रण हेतु Prevention and Control of Infectious and Contagious Diseases in Animals Act, 2009 एवं उसके अधीन बनाए गए नियम – "पशुओं में संक्रामक एवं संसर्गजन्य रोगों से बचाव और नियंत्रण (टीकाकरण प्रमाणपत्र का प्रपत्र, पोस्टमार्टम परीक्षण और पशुशव निपटारे की प्रकिया) **नियम 2010** "एवं "पशुओं में संक्रामक एवं संसर्गजन्य रोगों के नियंत्रण एवं रोकथाम (चेकपोस्ट एवं संगरोध शिविर, निरीक्षण की रीति आदि) **नियम 2015** " को लागू किया गया है।

The **Blue** ripple:

Professional bodies training: **IMA Indore**

The question is not ,
If India can afford to do it…

The question is
Can India afford not to do it…

MPSAPCAR: The way forward: **2022**

Dr. Sagar khadanga

MPSAPCAR: The way forward: **2022**

- Development of IEC materials for general public and HCW
- Convergence of WHOnet data of Medical college
- Development of state AntibiogramDevelopment of Day care / Urban PSC antibiotic advisory
- More DH→ Culture facility
- Updating State Antibiotic policy
- Updating MPSAPCAR
- AMR summit for exchange of ideas among the state

Challenges ahead:

- Possible vacuum in leadership
- Exhaustion of enthusiasm
- Veterinary lab support
- Inter-sectorial collaborations
- Decrease in OTC sell of antibiotics
- Implementation of policies
- Adherrance

Thank you